

DR. NARENDRA KOHLI

Dr. Narendra Kohli was born on January 06, 1940 in Sialkot (undivided Punjab). He started his education at the age of 5-6 years in Devsamaj High School, Lahore. After partition, in 1947, his family moved to Jamshedpur. He completed his Matric from Mrs. K.M.P.M. High School, Jamshedpur in 1957. Dr. Kohli obtained B.A. Hons. (Hindi) degree with First Class from Jamshedpur Co-operative College (Ranchi University) in 1961 and M.A. degree in Hindi Literature from Ramjas College (Delhi University) with Second Class in the year 1963. He also obtained Ph.D from the same university in 1970.

2. Dr. Kohli started his career as a Hindi Professor at P.G.D.A.V. (Evening) College, Delhi in 1963 and moved to Moti Lal Nehru College, Delhi in 1965. He took voluntary retirement in the year 1995, at the age of 55 years to work as a freelance writer.

3. Dr. Kohli has been a novelist, story writer, dramatist, satirist and an essayist, quite different from his contemporary litterateurs. His contribution to the enhancement of literature and the progress of society is evident. He has authored several stories that are popular, and original in nature. Although Dr. Kohli is modern, he does not follow the West. He has followed the roots of Indianism but he is not a Victorian.

4. Dr. Kohli's stories started getting published in 1960. He started writing satires in 1965. His language got sharpen and the ironies of the country and politics started appearing in his works. Through his writings, Dr. Kohli exhibited the inhumanity, cruelty and irrationality of social and political life. His various works distinguish Dr. Kohli from other contemporary authors, in acuity, ingenuity and diversity.

5. Dr. Kohli has also authored novels on family and social issues but he has not been satisfied with mere criticism of the deformity and ironies of society. He also experienced that the literature cannot obtain its entireness only with the depiction of narrow, concise and limited aspect of life nor the society can be benefitted with this.

6. Dr. Kohli took content from Ramkatha and authored a big novel in four volumes consisting of 1800 pages which is likely to be the first novel based on the complete Ramkatha and which resulted in the beginning of new era of writing voluminous epics. This work of Dr. Kohli was welcomed by one and all and it gave new direction to Hindi novel writing.

7. Dr. Kohli's another work has been 'Abhigyan' based on the story of Krishna. 'Abhigyan' is a novel on political story depicting the acceptance of Sudama by Krishna as his friend, publically, raising the status of Sudama socially, professionally and politically. Dr. Kohli has also authored a new novel 'Mahasamar' based on the story of 'Mahabharat', completely enlivening its story in the modern era. Through this creation, he has presented the hugeness of life in its very original form giving answers and solutions to the real life on the basis of experience and logic.

8. Dr. Kohli has also authored a series of novels namely, 'Todo Kara Todo' related to the life of Swami Vivekananda. Apart from this, he has also to his credit publication of about eighty books in last half century. His 37 books have been translated in various languages including English, Sanskrit, Nepali, Kannad, Gujarati etc. More than 125 students from different universities have undertaken research on the works of Dr. Kohli.

9. Dr. Kohli has received various awards and honours including D. Lit. (Honoris Causa) from Dev Sanskrit Vishvidyalaya, Haridwar; Vyas Samman – 2012; Maithilisharan Gupt Rashtriya Samman 2009-10; Swami Vivekanand Prestigious Award-2014; Subrhamaniyam Bharati Puraskar-2014; Living Legend Litrary Award; Lito Fest, Mumbai – 2016; Dr. Kamil Bulke Puraskar 1989-90; Shalaka Samman 1995-96; Delhi Hindi Akademi; Pt. Deendayal Upadhyay Samman- 2004 from Uttar Pradesh Hindi Sansthan etc.

10. Dr. Kohli has been an invitee member in various conferences including Vishwa Hindi Sammelan – 2003; Tashkand Hindi Sammelan-2010; Vishwa Hindi Sammelan-2012, Johannesburg; Vishwa Hindi Sammelan-2015, Bhopal etc. He has also been member of Management Committee of Vishwa Hindi Sachivalya, Mauritius; Sanskriti Salahkar Board, Ministry of Culture; Deendayal Upadhyaya Shatabdi Samaroh Samiti, Govt. of India etc.



डॉ. नरेन्द्र कोहली

डॉ. नरेन्द्र कोहली का जन्म 6 जनवरी 1940 ई. को स्यालकोट (अविभाजित पंजाब) में हुआ। शिक्षा का आरंभ पांच–छह वर्ष की अवस्था में देवसमाज हाई स्कूल, लाहौर में हुआ। 1947 ई. में देश के विभाजन के पश्चात् परिवार जमशेदपुर चला आया। 1957 ई. में मिसिज़ के. एम. पी. एम. हाई स्कूल, जमशेदपुर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1961 ई. में जमशेदपुर को–ऑपरेटिव कॉलेज (रांची विश्वविद्यालय) से बी.ए. ऑनर्स (हिन्दी) में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1963 ई. में रामजस कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) से हिंदी साहित्य में एम.ए. की परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया । इसी विश्वविद्यालय से 1970 ई. में पी.एच.डी. (विद्या वाचस्पति) की उपाधि प्राप्त की।

2. पहली नौकरी दिल्ली के पी.जी.डी.ए.वी.(सांध्य) कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक (1963–65 ई.) के रूप में की। दूसरी नौकरी दिल्ली के मोतीलाल नेहरू कॉलेज में 1965 ई. में आरंभ की और 1 नवंबर 1995 ई. को पचपन वर्ष की अवस्था में स्वतंत्र लेखन के लिए स्वैच्छिक अवकाश लेकर नौकरियों को सिलसिला समाप्त कर दिया।

3. नरेन्द्र कोहली उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, व्यंग्यकार तथा निबंधकार हैं। वे अपने समकालीन साहित्यकारों से पर्याप्त भिन्न हैं। साहित्य की समृद्धि तथा समाज की प्रगति में उनका योगदान प्रत्यक्ष हैं। उन्होंने प्रख्यात् कथाएं लिखी हैं; किंतु वे सर्वथा मौलिक हैं। वे आधुनिक हैं; किंतु पश्चिम का अनुकरण नहीं करते। भारतीयता की जड़ों तक पहुंचते हैं, किंतु पुरातनपंथी नहीं हैं।

4. 1960 ई. में नरेन्द्र कोहली की कहानियां प्रकाशित होनी आरंभ हुई थीं। 1965 ई. के आस–पास वे व्यंग्य लिखने लगे थे। उनकी भाषा वक्र हो गई थी, और देश तथा राजनीति की विडंबनाएं सामने आने लगी थीं। उन दिनों लिखी गई अपनी रचनाओं में उन्होंने सामाजिक और राजनितिक जीवन की अमानवीयता, क्रूरता तथा तर्कशून्यता के दर्शन कराए। हिंदी का सारा व्यंग्य साहित्य इस बात का साक्षी हैं कि अपनी पीढ़ी में उनकी सी प्रयोगशीलता, विविधता तथा प्रखरता कहीं और नहीं हैं।

5. उन्होंने परिवारिक और सामाजिक उपन्यासों की भी रचना की; किंतु केवल सामाजिक चित्रण तथा विडंबनाओं और विकृतियों की भर्त्सना मात्र से उन्हें सतोंष नहीं हुआ। उन्होंने अनुभव किया कि जीवन के संकीर्ण, संक्षिप्त तथा सीमित चित्रण से साहित्य अपनी परिपूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता; न संमाज ही उससे अधिक लाभान्वित हो सकता है। हीन वृतियों के चित्रण से हीनता तथा हीन भावनाओं की वृद्धि होगी। अतः साहित्य का लक्ष्य है, जीवन के उदात्त, महान् तथा सात्विक पक्ष का चित्रण करना।

6. नरेन्द्र कोहली ने रामकथा से सामग्री लेकर चार खंडों में 1800 पृष्ठों को एक बृहदाकार उनन्यास लिखा। कदाचित् संपूर्ण रामकथा को लेकर, किसी भी भाषा में लिखा गया, यह प्रथम उपन्यास है। इसी से हिंदी में महाकाव्यात्मक उपन्यासों की पंरपरा आरंभ हुई । उपन्यास है, इसलिए समकालीन, प्रगतिशील, आधुनिक तथा तर्काश्रित है। इसकी आधारभूत सामग्री भारत की सांस्कृतिक परंपरा से ली गई है, इसलिए इसमें जीवन के उदात्त मूल्यों का चित्रण है, मनुष्य की महानता तथा जीवन की अबाधता का प्रतिपादन है। इस कृति का अभूतपूर्व स्वागत हुआ; और हिंदी उपन्यास की धारा की दिशा की बदल गई।

7. नरेन्द्र कोहली ने एक उपन्यास – 'अभिज्ञान'–कृष्णकथा को लेकर लिखा। कथा राजनीतिक है। निर्धन और

अकिंचन सुदामा को सामर्थ्यवान श्रीकृष्ण, सार्वजनिक रूप से अपना मित्र स्वीकार करते हैं, तो सामाजिक, व्यावसायिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सुदामा की साख तत्काल बढ़ जाती है।... किंतु इस कृति का मेरुदंड भगवद्गीता का 'कर्म सिद्धात है। नरेन्द्र कोहली ने महाभारत–कथा के आधार पर, अपने नए उपन्यास 'महासमर की रचना की। उन्होंने इस कृति को अपने युग में पूर्णतः जीवंत कर दिया। जीवन को उसकी संपूर्ण विराटता के साथ अत्यंत मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जीवन के वास्तविक रूप से संबंधित प्रश्नों का समाधान वे अनुभूति और तर्क के आधार पर देते हैं। इस कृति में आप महाभारत पढ़ने बैठेंगे और अपना जीवन पढ़ कर उठेंगे।

8. नरेन्द्र कोहली ने एक और उपन्यास श्रृंखला ''तोंड़ो कारा तोड़ो'' लिखी, इसका संबंध स्वामी विवेकानन्द के जीवन से है। नरेन्द्र कोहली के इस सरस उपन्यास के प्रत्येक पृष्ठ पर, उपन्यासकार के अपने नायक के साथ तादात्म्य को देख कर पाठक चकित रह जाता है। स्वामी विवेकानन्द का जीवन बंधनों तथा सीमाओं के अतिक्रमण के लिए सार्थक संघर्ष था: बंधन चाहे प्रकृति के हों, समाज के हों, राजनीति के हों, धर्म के हों, अध्यात्म के हों। स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व का आकर्षण ऐसा जादू है, जो सिर चढ़ कर बोलता है। मानव के चरम विकास की साक्षात् मूर्ति थे वे। भारत की आत्मा... और वे एकाकार हो गए थे। इन तीन कालजयी उपन्यास शृंखलाओं के अतिरिक्त पिछली आधी शताब्दी में उनकी अस्मी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। सैंतीस पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी, संस्कृत, नेपाली, कन्नड़, मराठी, गुजराती, ओडिया, मल्यालम भाषाओं में हुआ। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में एक सौ पच्चीस से अधिक शोध छात्रों द्वारा नरेन्द्र कोहली साहित्य पर शोध हुआ है और हो रहा है।

9. वे डी. लिट् की मानद उपधि (देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार), व्यास सम्मान–2012, मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान 2009–10, स्वामी विवेकानन्द प्रेसटिजियस एवार्ड–2014, सुब्रहमण्यम भारती पुरस्कार–2014, लिविंग लीजेंड लिट्रेरी एवार्ड, लिटो फेस्ट, मुंबई–2016, डॉ. कामिल बुल्के पुरस्कार 1989–90 ई. शलाका सम्मान 1995–96 ई. हिंदी अकादमी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय सम्मान–2004 ई. उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, इत्यादि से अलंकृत हैं।

10. वे विश्व हिंदी सम्मेलन, सूरिनाम–2003 ई., ताशकंद हिंदी सम्मेलन–2010, विश्व हिन्दी सम्मेलन, जोहानेसबर्ग (दक्षिणी अफ्रीका) 2012 ई. विश्व हिंदी सम्मेलन, भोपाल 2015, विश्व हिंदी सम्मेलन 2017, पेरिस, विश्व रामायण सम्मेलन 2016, सूवा, फीजी के सरकारी शिष्टमंडल के सदस्य रहे हैं। आजकल विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरिशस की प्रबंधकारिणी, संस्कृति सलाहकार बोर्ड, संस्कृति मंत्रालय, दीनदयाल उपाध्याय शताब्दी समारोह समिति, भारत सरकार के सदस्य है।